राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत)

संस्कृतकाव्यशास्त्रं छन्दशास्त्रञ्च ।

स्नातक द्वितीय सेमेस्टर

- आलङ्कारिकाः आचार्याः –

- भरतः, भामहः, दण्डी, वामनः, आनन्दवर्धनः, कुन्तकः, मम्मटः, क्षेमेन्द्र, विश्वनाथ ।

1. भरत -

- रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य
- काल – ५०० ई.पू. मनमोहनघोष।
- कृति – नाट्यशास्त्र, ३६ अध्याय, श्लोक – ६००० ।
- उपाधि – तौर्यत्रिकसूत्रकार (भवभूति द्वारा)।

नाट्यवेदः कथं ब्रह्मन्नुत्पन्नः कस्य वा कृते।

कत्यङ्गः किम्प्रमाणश्च प्रयोगश्चास्य कीदृशः ॥ १ ॥

प्रथमाध्याय
नाट्यसम्बन्धी प्रश्नोत्तर

षष्ठ/सप्तमाध्याय
रस सम्बन्धी विचार

१७वाँ अध्याय
काव्यलक्षण/अलङ्कार

दश रूपकों की चर्चा

- नाटक का प्रणयन – ऋग्वेद (पाठ्य/संवाद), यजुर्वेद (अभिनय), सामवेद (गीत), अथर्ववेद (रस)।
- रस सूत्र – विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः।
- नाट्यशास्त्र में चार अलङ्कारों का प्रयोग – उपमा, रूपक, यमक और दीपक।
- शान्त रस को छोडकर सभी रसों का प्रयोग।

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न कला।
न तत्कर्म न योगोऽसौ नाट्येस्मिन्यन्न दृश्यते॥

टीकाकार -

- अभिनवभारती – अभिनवगुप्त ।
- नाट्यदर्पण – रामचन्द्र/गुणचन्द्र ।
- नाटक लक्षणरत्नकोश – सागरनन्दी ।
- नाटक चन्द्रिका – रूपगोस्वामी ।
- नाट्यप्रदीप – सुन्दरमित्र ।
- The NatyaShastra – V. Raghavan ।

अन्य रसवादी आचार्य -

- भोजराज – सरस्वतीकण्ठाभरण ।
- राजशेखर – काव्यमीमांसा ।
- केशवमिश्र – अलङ्कारशेखर ।
- शारदातनय – भावप्रकाशन ।
- विश्वनाथ – साहित्यदर्पण ।

नोट – नाट्यशास्त्र का अंग्रेजी अनुवाद मनमोहन घोष द्वारा किया गया है ।

2. भामह -

- अलङ्कार सम्प्रदाय के प्रवर्तक।
- स्थान – कश्मीर।
- कृति – काव्यालङ्कार (६ परिच्छेद और ४०० पद्य)।
- उपाधि – रक्रिलगोमिसूनु।
- काव्य भेद – ५ (सर्गबन्ध, अभिनयोऽर्थ, आख्यायिका, कथा और अनिबद्ध)।
- तीन गुण – माधुर्य, ओज और प्रसाद।

प्रथम परिच्छेद
काव्यशरीर निर्णय

द्वितीय/तृतीय परिच्छेद
अलङ्कार निर्णय

पञ्चम परिच्छेद
न्यायनिर्णय निर्णय

प्रणम्य सार्वं सर्वज्ञं मनोवाक्कायकर्मभिः।
काव्यालङ्कार इत्येष यथाबुद्धि विधास्यते॥

टीकाकार

- भामह विवरण – उद्भट (कश्मीर नरेश जयादित्य के सभापति)
- काव्यालङ्कार सार संग्रह – उद्भट
- लघुविवृति – प्रतिहारेन्दु राज (काव्यालङ्कार सार संग्रह पर टीका)

अन्य अलङ्कारवादी आचार्य

- दण्डी – काव्यादर्श
- रुद्रट – काव्यालङ्कार
- उद्भट – भामहविवरण
- प्रतिहारेन्दुराज – लघुविवृति।
- जयदेव – चन्द्रालोक
- अप्पयदीक्षित - परिमल

अङ्गीकरोति यः काव्यं, शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मात्, अनुष्णमनलं कृती॥

3. दण्डी -

- **जन्मसमय** – छठी शताब्दी, (६०० ई. के लगभग)।
- **जन्मस्थान** – काँचीनगर (महाराष्ट्र), (पल्लव नरेश नृसिंह विष्णु के आश्रित कवि)।
- **माता** – गौरी, **पिता** - वीरदत्त, (यह भारवि के प्रपौत्र थे)।
- **ग्रन्थ** – दशकुमारचरितम् - तीनखण्ड, ८ उच्छवास, काव्यादर्श (तीन परिच्छेद, ६६० श्लोक), अवन्तिसुन्दरीकथा, छन्दोविचिति।
- काव्य के तीन हेतु – प्रतिभा, श्रुत तथा अभियोग।
- काव्य भेद - गद्य, पद्य और मिश्र।
- रीति – दो (वैदर्भी और गौडी)।

प्रथम परिच्छेद
काव्यलक्षण/भेद/गुण

द्वितीय परिच्छेद
अलङ्कार निरूपण

तृतीय परिच्छेद
काव्य दोष वर्णन

टीकाकार

- मार्जन – हरिनाथ
- काव्यतत्त्वविवेचनकौमुदी – कृष्णाकिङ्कर
- श्रुतानुपालिनी – वादिङ्घल
- वैमल्यविधायिनी – मल्लिनाथ (जगन्नाथसुत)

नोट – बोथलिङ्क द्वारा काव्यादर्श का जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया है।

4.वामन -

- रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक।
- काल – ८वीं शताब्दी।
- वामन कश्मीर नरेश जयापीड (७७९-८१३ ई०) के मन्त्री थे।
- कृति – काव्यालङ्कारसूत्र (पाँच अधिकरण और १२ अध्याय)।
- तीन रीति – वैदर्भी, गौडी और पाञ्चाली।
- गुण – दस (ओज, प्रसाद, श्लेष, समता, कान्ति, समाधि, माधुर्य, सौकोमार्य, उदारता और अर्थव्यक्ति)।

टीका – कामधेनु – गोपेन्द्रतिप्पभूपाल/ साहित्यसर्वस्व - महेश्वर

प्रथम अधिकरण
शारीर

द्वितीय अधिकरण
दोषदर्शन

तृतीय अधिकरण
गुणविवेचन

चतुर्थ अधिकरण
आलङ्कारिक

5. आनन्दवर्धन -

- ध्वनि सम्प्रदाय के प्रवर्तक।
- काल – ८५० ई०।
- स्थान – कश्मीर
- आश्रयदाता – कश्मीर नरेश अवन्तिवर्मा के सभा पण्डित।
- पिता – नोणोपाध्याय।
- उपाधि – अलङ्कारसरणिव्यवस्थापक (जगन्नाथ), राजानक (कश्मीर नरेश), सहृदयचक्रवर्ती (अभिनवगुप्त)।
- कृति – ध्वन्यालोक (चार उद्योत, १२९ कारिका), देवीशतकम्, अर्जुनचरितम्, विषमबाणलीला, देवीशतकम् और तत्त्वालोक।

टीकाकार

- चन्द्रिका – अनुपलब्ध।
- विवरण – अनुपलब्ध।
- लोचन – अभिनव गुप्त (उपलब्ध)।

अन्य ध्वनिवादी आचार्य

- रूय्यक – अलङ्कारसर्वस्व।
- मम्मट – काव्यप्रकाश।
- अभिनवगुप्त – लोचन टीका।
- जगन्नाथ – रसगङ्गाधर।

नोट – भट्टनायक ने ध्वनि सिद्धान्त के विरोध में “हृदयदर्पण” लिखा था।

6. कुन्तक -

- वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य।
- काल – १०वीं शताब्दी का उत्तरार्ध और ११वीं शताब्दी का पूर्वार्ध।
- स्थान – कश्मीर निवासी।
- उपाधि – राजानक (कश्मीर नरेश द्वारा)।
- कृति – वक्रोक्तिकाव्यजीवितम् (चार उन्मेष, अपूर्ण प्राप्त)।
- आचार्य कुन्तक अभिधावादी आचार्य थे।
- वक्रता के षड् भेद बताए हैं।

7. मम्मट -

- काल – १०५० से ११०० तक के मध्य।
- स्थान – कश्मीर।
- पिता – जैय्यट। भाई – उव्वट और कैय्यट।
- उपाधि – राजानक, ध्वनिप्रतिष्ठापकपरमाचार्य।
- कृति – काव्यप्रकाश (दस उल्लास, १४२ कारिकाएँ, ६०३ उदाहरण), शब्दव्यापारविचार।

प्रथमोल्लास
काव्यलक्षण/प्रयोजन/हेतु/भेद

द्वितीयोल्लास
शब्दार्थस्वरूपनिर्णय

चतुर्थोल्लास
रसस्वरूप

सप्तमोल्लास
दोषनिरूपण

अष्टमोल्लास
गुणनिरूपण

नवम/दशम उल्लास
अलङ्कारनिरूपण

टीकाकार

काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीकास्तथाप्येष तथैव दुर्गमः।

- सङ्केत – माणिक्यचन्द्र।
- दीपिका – जयन्तभट्ट।
- काव्यादर्श – सोमेश्वर।
- दर्पण – विश्वनाथ।
- सुधासागर – भीमसेन।
- लघ्वी/बृहती – नागेशभट्ट।
- उद्योत – वैद्यनाथ।
- विवेका – श्रीधर।
- बालबोधिनी – झलकीकर।
- काव्यप्रदीप – गोविन्द ठक्कर।

8. क्षेमेन्द्र -

- औचित्य सम्प्रदाय के प्रवर्तक।
- काल – ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध।
- स्थान – कश्मीर। (अनन्तराज के शासनकाल में)।
- पिता – प्रकाशेन्दु, पितामह – सिन्धु, गुरू – अभिनवगुप्त।
- उपाधि – व्यासदास,
- कृतियाँ – औचित्यविचारचर्चा (१९ कारिका), कविकण्ठाभरण (५ सन्धि/अध्याय) और सुवृत्तितिलक (छन्दनिरूपण)।
- अन्यकृतियाँ – रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी, बृहत्कथामञ्जरी, दशावतारचरितम् और नृपावली आदि।

प्रथम सन्धि
कवित्वप्राप्ति

द्वितीय सन्धि
शिक्षाकथन

तृतीय सन्धि
चमत्कारकथन

चतुर्थ सन्धि
गुणदोषविभाग

पञ्चम सन्धि
परिचयप्राप्ति

9. विश्वनाथ -

- काल – १४वीं शताब्दी।
- स्थान – उत्कलदेश वासी।
- पिता – चन्द्रशेखर। प्रपितामह – नारायण।
- उपाधि – सन्धिविग्रहिक महापात्र (कलिङ्ग नरेश द्वारा)।
- कृतियाँ – साहित्यदर्पण (१० परिच्छेद), प्रभावती परिणय, चन्द्रकला, राघवविलास, नरसिंहविजय, कंसवध, कुवलयाश्चरित, प्रशस्तिरत्नावली और काव्यप्रकाश पर दर्पण टीका आदि।
- ४८ प्रकार के नायक और ३८४ प्रकार की नायिका का वर्णन किया है।
- टीकाएँ – लोचन – अनन्तदास। विवृत्ति – रामचरणतर्कवागीश। विज्ञप्रिया – माहेश्वरभट्ट। प्रभा – गोपी नाथ। टिप्पण – मथुरानाथशुक्ल।

षड्-प्रस्थान में काव्य का स्वरूप

रस सम्प्रदाय -	विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगात् रसनिष्पत्तिः।
अलङ्कार सम्प्रदाय -	शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्।
रीति सम्प्रदाय -	काव्यं ग्राह्यमलङ्कारात्। रीतिरात्मा तु काव्यस्य।
ध्वनि सम्प्रदाय -	काव्यस्यात्मा ध्वनिः। शब्दार्थशरीरन्तावत् काव्यम्।
वक्रोक्ति सम्प्रदाय -	शब्दार्थौ सहितौ वक्र कविव्यापारशालिनि। बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाल्हादकारिणि।
औचित्य सम्प्रदाय -	औचित्यं काव्यजीवितम्। औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।

राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी
(चम्पावत)

॥ संस्कृत विभाग ॥